विचार बिन्दु

संसार में चार तरह के लोग होते हैं–
मक्खीचूस– जो ना आप खाएं ना दूसरों को खाने दें।
कंजूस– जो आप खाएं पर दूसरों को ना दें।
उदार– जो आप भी खाएं और दूसरों को भी दें।
दाता– जो आप ना खाएं पर दूसरों को दें।
सब लोग दाता नहीं तो कम से कम उदार तो बन ही सकते हैं।

–अफलातून

तेल पर सरकारी मुनाफे का खेल

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पिछले महीनों में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का फायदा आम जनता तक नहीं पहुंच रहा है। कुछ समय से कच्चे तेल की कीमतों में बड़ा उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट देखी गई है। इस दौरान ब्रेंट क्रूड ऑयल के प्राइस गिरकर 79.04 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गए हैं। वहीं डब्ल्यूटीआई क्रूड ऑयल की बात करें तो यह गिरकर 74.29 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया है। दिसंबर में भारत का कच्चे तेल के आयात का औसत मूल्य 77.79 डॉलर प्रति बैरल रहा है। यह नवंबर में 87.55 डॉलर प्रति बैरल और अक्टूबर में 91.70 डॉलर प्रति बैरल था। ओपेक देशों की तरफ से किये निर्णय का असर यह हुआ कि रेकार्ड लेवल तक गिरने वाला क्रूड बढ़कर एक समय 100 डॉलर के करीब पहुंच गया था। लेकिन देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव देखने को नहीं मिल रहा है।

कच्चे तेल की कीमतों में हो रही गिरावट का असर भारत पर देखने को नहीं मिल रहा है। 22 मई के बाद से पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलव नहीं हुआ है। सितंबर 2022 तक रूस अपने तेल को ब्रेंट क्रूड के मुकाबले 20 डॉलर प्रति बैरल सस्ता बेच रहा था। पिछले छह महीने में भारत सस्ते रूसी तेल का बड़ा खरीदार बनकर उभर रहा है। लेकिन 60 डॉलर के प्राइस कैप लगने के बाद भारत को आने वाले दिनों में नुकसान उठाना पकड़ सकता है। फिलहाल भारत को रूस की ओर से तेल छूट पर मिल रही है। हालांकि, भारत के लिए फिलहाल किसी तरह की मुश्किल बढ़ती हुई नजर नहीं आ रही है। क्योंकि मौजूदा समय में 60 से 70 डॉलर प्रति बैरल की दर से ही रूस से तेल खरीद रहा है। कच्चे तेल की कीमतें जुलाई, 2008 के बाद इस साल मार्च में 140 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गई थीं। उसके बाद से 46 फीसदी गिरावट के साथ यह इस साल सबसे निचले स्तर 76 डॉलर प्रति बैरल के करीब कारोबार कर रहा है। कच्चे तेल को लीटर और रुपये के हिसाब से अनुमान लगाएं तो कीमत 9 महीने में 33 रुपये प्रति लीटर से ज्यादा घटनी चाहिए। इसके बाद भी देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में गिरावट देखने को नहीं मिली है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल का भाव 10 महीने के न्यूनतम स्तर पर लुढ़क गया है। तेल कंपनियों ने लंबे समय तक दाम स्थिर रखे हैं, जिसकी वजह से इन्हें भारी घाटा भी हुआ है। लेकिन अब पेट्रोल-डीजल की बिक्री पर हो रहे फायदे का कुछ हिस्सा जनता को देने की चर्चा हो रही है। तेल कंपनियों ने बुधवार 28 दिसंबर को भी पेट्रोल-डीजल की कीमतें स्थिर रखी हैं। इस तरह आज लगातार 216वां दिन है जब देश में पेट्रोल और डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। पेट्रोल का भाव देश के कई स्थानों पर 110 रूपये प्रति लीटर को पार कर गया है।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पिछले महीनों में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का फायदा आम जनता तक नहीं पहुंच रहा है। कुछ समय से कच्चे तेल की कीमतों में बड़ा उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट देखी गई है।

हालांकि इससे देश की अर्थव्यवस्था में व्यापक सुधार के लक्षण परिलक्षित हुए हैं। आज की स्थिति की निष्पक्ष होकर समीक्षा करें तो सरकार मालामाल हो रही है और जनता कंगाल। आम उपभोक्ता आज भी महंगाई की बेरहम मार से पीड़ित होकर कराहने पर मजबूर है। सब्जी से लेकर दाल तक के भाव आसमान पर हैं और जनता धरती पर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए यह अवधि सुकून भरी है। पैट्रोल-डीजल की कीमतें हाहाकार की स्थिति से नीचे आकर धीरे-धीरे आम आदमी की पकड़ में आने लगी हैं। मगर कीमतों में गिरावट का पूरा फायदा सरकार आम जनता को नहीं दे रही है। इसमें सरकार के अपने तर्क वाजिब हो सकते हैं मगर जनता अपने अच्छे दिनों का इन्तजार कर रही है। जनता चाहती है कि तेल के भावों में गिरावट का उसे पूरा फायदा मिलना ही चाहिये।

इस समय विश्व की अर्थव्यवस्था की मजबूत धुरी तेल ही है। विभिन्न देशों की सरकारों की राजस्व प्राप्ति का एक बड़ा हिस्सा पैट्रोलियम पदार्थों से हासिल होता है। सरकार का कहना है कि जब तेल की कीमतें आसमान को छूने लगती हैं तब जनता को राहत प्रदान करने के लिए सरकार पर्याप्त मात्रा में अनुदान देती है जिसका फायदा जनता तक पहुंचता है। आज जब कीमतें गिर रही हैं तो सरकार को उत्पाद कर वसूलने का पूरा अधिकार है। सरकार का यह कथन पूरी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता। लोकतांत्रिक व्यवस्था में पहला हित जनता का संरक्षित होना है। सरकार का यह दायित्व है कि वह अपनी जनता को विभिन्न रियायतें उपलब्ध कराकर लाभान्वित करे।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

विवेकानंद जी और उनके मुस्लिम अनुयायी के बीच मार्मिक संवाद

बापू के भजन ईश्वर अल्लाह एक ही नाम, सबको सन्मति दें भगवान को सुन कर के मन के अंदर कुछ सवाल उभरते हैं जैसे संसार में अनेकों प्रकार के धर्मालंबी क्यों है? भगवान के रूप यथा शिव, विष्णु, ब्रह्मा, राम, कृष्ण, गणेश, ईशु मसीह, खुदा, महावीर बुद्ध आदि? हिन्दू मन्दिर में प्रवेश करने के पूर्व स्नान करते हैं? मुसलमान वजू क्यों करते हैं ? हिन्दू मृतक का अंतिम संस्कार करते हैं? क्यों मुसलमान शव को दफनाते हैं? अरब के मुल्कों में मांस खाया जाया है? क्यों हिन्दू वेजिटेरियन हैं? क्यों मुसलमान सूअर को खाने को जायज कहते हैं, दूसरी तरफ हिन्दू गाय के वध को पाप मानते हैं? इन सभी मुश्किल सवालों का उत्तर हमें विवेकानंद जी और उनके शिष्य मुंशी फैज अली के मध्य उपलब्ध वार्तालाप से मिल सकता है।

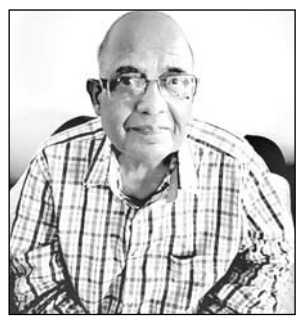
डॉ. जे.के.गर्ग

स्वामी विवेकानंद जी

मुंशी फैज अली ने स्वामी विवेकानंद से पूछा– 'हमें बताया गया है कि अल्लाह एक ही है। यदि वह एक ही है, तो फिर संसार उसी ने बनाया होगा?' स्वामी जी ने जवाब दिया, 'सत्य है।' मुशी फेज अली ने फिर सवाल किया, 'तो फिर इतने प्रकार के मनुष्य क्यों बनाये। जैसे कि हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई और सभी को अलग-अलग धार्मिक ग्रंथ भी दिये। एक ही जैसे इंसान बनाने में उसे यानि की अल्लाह को क्या एतराज था। सब एक होते तो न कोई लडाई और न कोई झगडा होता।'

स्वामी ने हँसते हुए उत्तर दिया, 'मुंशी जी विचार करो वो सृष्टी कैसी होती जिसमें एक ही प्रकार के फूल होते। केवल गुलाब होता, कमल या रजनीगंधा या गेंदा जैसे फूल न होते !'

फैज अली ने कहा– 'सच कहा आपने। यदि एक ही दाल होती तो खाने का स्वाद भी एक ही होता। और तब दुनिया तो बडी फीकी सी हो जाती। स्वामी जी ने कहा, 'मुंशीजी ! इसीलिए तो ऊपर वाले ने अनेक प्रकार के जीव-जंतु और इंसान बनाए ताकि हम पिंजरे का भेद भूलकर जीव की एकता को पहचाने ।'

मुंशी फैज अली ने स्वामी विवेकानंद से पूछा, 'हिन्दु कहते हैं कि मंदिर में जाने से पहले या पूजा करने से पहले स्नान करो। मुसलमान नमाज पढने से पहले वजु करते हैं। क्या अल्लाह ने कहा है कि नहाओ मत, केवल लोटे भर पानी से हांथ-मुंह धो लो?'

स्वामी ने बताया कि– 'नहीं, अल्लाह ने नही कहा, अरब देश में इतना पानी कहां है कि वहाँ पाँच समय नहाया जाए । जहां पीने के लिए पानी बड़ी मुश्किल से मिलता हो वहां कोई पाँच समय कैसे नहा सकता है। यह तो भारत में ही संभव है, जहां नदियां बहती हैं, झरने बहते हैं, कुएं जल देते हैं। तिब्बत में यदि पानी हो तो वहां पाँच बार व्यक्ति यदि नहाता है तो ठंड के कारण ही मर जायेगा। यह सब प्रकृति ने सबको समझाने के लिये किया है।'

- **तिब्बत में पांच बार व्यक्ति यदि नहाता है तो ठंड के कारण ही मर जायेगा**
- **अरब देश में इतना पानी कहां है कि वहाँ पांच समय नहाया जाए**
- **'सब प्रकृति ने सबको समझाने के लिये किया है'**

स्वामी विवेका नंद जी ने आगे समझाते हुए कहा कि, 'मनुष्य की मृत्यु होती है। उसके शव का अंतिम संस्कार करना होता है। अरब देशों में वृक्ष नही होते थे, केवल रेत थी। अत: वहाँ मृतिका समाधी का प्रचलन हुआ, जिसे आप दफनाना कहते हैं। भारत में वृक्ष बहुत बड़ी संख्या में थे, लकड़ी पर्याप्त उपलब्ध थी, अत: भारत में अग्नि संस्कार का प्रचलन हुआ। जिस देश में जो सुविधा थी वहाँ उसी का प्रचलन बढा । वहाँ जो मजहब पनपा उसने उसे अपने दर्शन से जोड़ लिया।'

फैज अलि विस्मित होते हुए बोला ! 'स्वामी जी इसका मतलब है कि हमें शव का अंतिम संस्कार प्रदेश और देश की भौगोलिक अवस्था के मुताबिक़ करना चाहिए , मजहब के अनुसार नही।'

स्वामी जी बोले, 'हाँ ! यही उचित है। किन्तु अब लोगों ने उसके साथ धर्म को जोड़ दिया। मुसलमान ये मानता है कि उसका ये शरीर कयामत के दिन उठेगा इसलिए वह शरीर को जलाकर समाप्त नहीं करना चाहता । हिंदू मानता है कि उसकी आत्मा फिर से नया शरीर धारण करेगी इसलिए उसे मृत शरीर से एक क्षण भी मोह नहीं होता।'

तब फैज अलि ने पूछा कि, 'एक मुसलमान के शव को जलाया जाए और एक हिन्दु के शव को दफनाया जाए तो क्या प्रभु नाराज नही होंगे?'

स्वामी जी ने कहा, 'प्रकृति के नियम ही प्रभु का आदेश हैं। वैसे प्रभु कभी रुष्ट नही होते वे प्रेमसागर हैं, करुणा सागर हैं ।'

मुशी जी ने पूछा, 'इतने मजहब क्यों?'

स्वामी जी ने कहा, 'मजहब तो मनुष्य ने बनाए हैं, प्रभु ने तो केवल धर्म बनाया है।'

मुंशी जी ने कहा कि, 'ऐसा क्यों है कि एक मजहब में कहा गया है कि गाय और सुअर खाओ और दूसरे में कहा गया है कि गाय मत खाओ, सुअर खाओ एवं तीसरे में कहा गया कि गाय खाओ सुअर न खाओ इतना ही नही कुछ लोग तो ये भी कहते हैं कि मना करने पर जो इसे खाये उसे अपना दुश्मन समझो।'

स्वामी जी जोर से हँसते हुए मुंशी जी से पूछे कि, 'क्या ये सब प्रभु ने कहा है?'

मुंशी जी बोले नहीं, 'मजहबी लोग यही कहते हैं।'

स्वामी जी बोले, 'मित्र ! किसी भी देश या प्रदेश का भोजन वहां की जलवायु की देन है। सागर तट पर बसने वाला व्यक्ति वहां खेती नहीं कर सकता, वह सागर से पकड़ कर मछलियां ही खायेगा। उपजाऊ भूमि के प्रदेश में खेती हो सकती है। वहां अन्न-फल एवं शाक-भाजी उगाई जा सकती है। उन्हें अपनी खेती के लिए गाय और बैल बहुत उपयोगी लगे। उन्होने गाय को अपनी माता, धरती को अपनी माता माना और नदी को माता माना। क्योंकि ये सब उनका पालन-पोषण माता के समान ही करती हैं। अब जहां मरुभूमि है वहाँ खेती कैसे होगी? खेती नही होगी तो वे गाय और बैल का क्या करेंगे? अन्न है नही तो खाद्य के रूप में पशु को ही खायेंगे। तिब्बत में कोई शाकाहारी कैसे हो सकता है? वही स्थिति अरब देशों में है। जापान में भी इतनी भूमि नहीं है कि कृषि पर निर्भर रह सकें।

डॉ. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

ग्रामीण सरसों की तूड़ी बेचकर करेंगे विद्यालय विकास

पीपलू क्षेत्र के जयकिशनपुरा गांव में शिक्षकों की पहल पर ग्रामीणों ने स्कूल विकास के लिए बैठक की।

निवाई, (निसं)। पीपलू क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जयकिशनपुरा के शिक्षकों की प्रेरणा से ग्रामीणों ने विद्यालय के लिए अनूठा समर्पण करने का ऐलान किया है।

जयकिशनपुरा के ग्रामीणों द्वारा किए गए तूड़ीदान से शिक्षा के मंदिर में नए कक्षा कक्ष बनेंगे। इसका निर्णय 9 जनवरी को रात्रि में जयकिशनपुरा शाला परिवार की ओर से आहूत की गई सर्व समाज की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया।

राज्य स्तर पर अपने नवाचारों के लिए सम्मानित हुए शिक्षक दिनकर विजयवर्गीय ने 9 जनवरी सोमवार रात हुई बैठक में सर्व समाज के समक्ष विद्यालय विकास में सहयोग का प्रस्ताव रखा। बैठक में गांव की लगभग एक हजार बीघा भूमि की तूड़ी से होने वाली करीब 10० लाख रुपए की आय को विद्यालय विकास में देने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

- **एक हजार बीघा भूमि की तूड़ी से होने वाली करीब 10 लाख रुपए की आय विद्यालय को देगें**

गत दिनों जयकिशनपुरा के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के 4 कार्मिकों ने शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा शिक्षक दिवस पर प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मान में दी गई सम्पूर्ण राशि 52400 रुपए को ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय में विकास के लिए दान की थी।

विष्णु शर्मा, सीबीईओ पीपलू का कहना है कि शिक्षा का दान सबसे बडा दान है। सभी गांवों में ऐसी पहल होनी चाहिए।

83 साल की उम्र में भी मोहनलाल कर रहे हैं गौसेवा

पिछले सात वर्षों से शारदापुरम क्षेत्र में कर रहे हैं गायों की सेवा

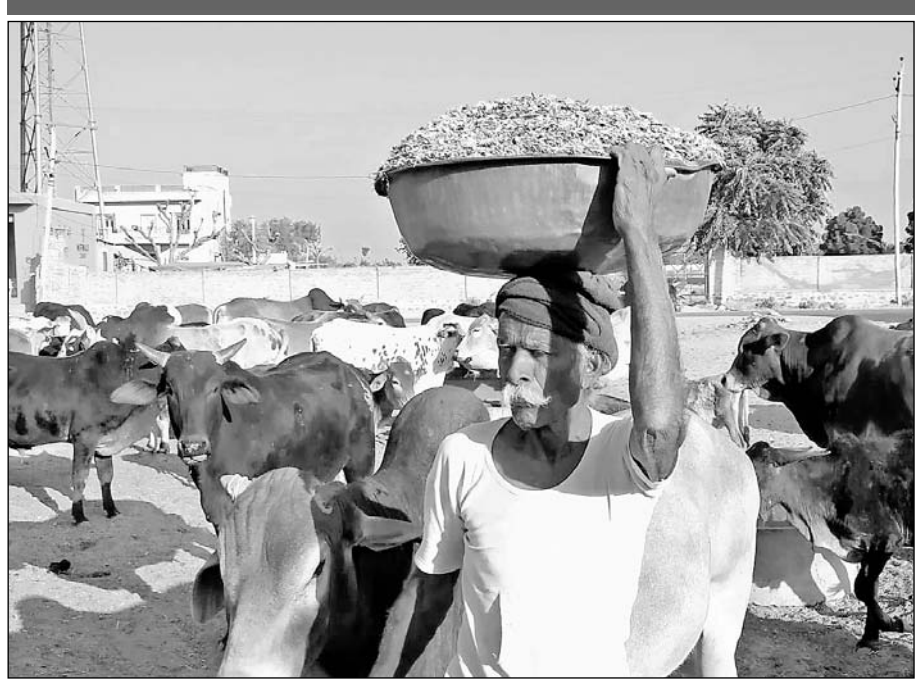
हाड़ कपाती सर्दी में राठौड़ी कुआं निवासी मोहनलाल गौ सेवा में जुटे हैं।

नागौर, (निसं)। सवेरे के 6 बजे घनघोर अंधेरा, हड्डियों को कंपकंपाती सर्दी, गायों के बीच तगारी उठाए एक बुजुर्ग को बारी-बारी से गायों के बीच घास व कुतर का वितरण करते हुए देखा जा सकता है। पिछले 7 वर्षों से शारदापुरम क्षेत्र में 83 वर्षीय राठौड़ी कुआं निवासी मोहनलाल सांखला गजधर पुत्र चेनाराम माली के लिए शारदा बाल निकेतन के पीछे व चूंटीसरा चौराहा के पास बनी अस्थाई गौशाला में गायों की सेवा करना उनका जीवन बन चुका है। अस्थाई गौशाला की सफाई, गायों को चारा देना, इसके साथ ही ठंड से बचाव के उपाय करना उनके काम में शामिल है।

महावीर गौशाला के सहयोग से बने इस गौ सेवा केंद्र को लंपी रोग से पीड़ित गोवंश के लिए अ स्थाई केंद्र भी बनाया गया जहां गायों की पोषण के साथ-साथ चिकित्सकीय उपचार भी किया जाता रहा है। इस कार्य में महावीर गौशाला के संचालक बलदेव सिंह सांखला, नरपत चारण, गजदर रामकुमार सांखला, पवन सांखला, भीमराज शर्मा, नत्थूराम सांखला, इंद्र चंद सांखला सहित अनेक समाज बंधुओं द्वारा सहयोग किया गया।

राशिफल गुरूवार 12 जनवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 2:24 तक, सौभाग्य योग दिन 12:32 तक, तैतिल करण सांय 4:38 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 9:00 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज मंगल मार्गी रात्रि 2:25 से होगा। आज स्वामी विवेकानन्द जयन्ती और राष्ट्रीय युवा दिवस है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:16 से 12:35 तक, लाभ-अमृत 12:35 से 3:11 तक, शुभ 4:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:48

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

सिंह
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में नियंत्रण बढ़ेगा। आय में वृद्धि होगी।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धन हानि हो सकती है।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय के नवीन स्त्रोत सामने आ सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

जापानी पर्यटक का राधा-कृष्ण प्रेम, ऊंट पर उकेरी आर्ट

कैमल फेस्टिवल के लिए सजाया ऊंट

बीकानेर, (कासं)। पास के नाल गांव में इन दिनों एक जापानी लड़की को देख लोग हैरान हो रहे हैं। पिछले एक महीने से टोक्यो (जापान) की ये लड़की दिनभर गांव में ऊंटों के बीच रह रही है। राधा-कृष्ण से इतना प्रेम है कि कैमल फेस्टिवल के लिए अपने ऊंट को सजाते हुए उनकी ही आर्ट को उकेरा है।

एक महीने से यहीं के गांव में रहते हुए ही मैगुमी उर्फ मेगी (28) राजस्थानी फूड का भी आनंद ले रही हैं। उन्हें बाजरे की रोटी और गुड के साथ लंच करना काफी पसंद है। इनसे संवाददाता ने कैमल फेस्टिवल को लेकर क्या खास तैयारी है यह भी जाना। मैगुमी बीकानेर एयरफोर्स स्टेशन के पास रह कर अपने सहयोगियों के साथ ऊंट का 'हेयर कट' कर रही हैं। यह हेयर कट से ऊंट के शरीर पर तरह-तरह की आर्ट बनाती है। ये आर्ट इसलिए खास है, क्योंकि मैगुमी भारतीय परंपराओं से जुड़े चित्र ऊंट पर बनाती हैं।

- **नाल गांव में एक माह से रह रही मैगुमी को पसंद है बाजरे की रोटी और गुड़**

मैगुमी ने बताया कि वह ऊंट पर कृष्ण और राधा के प्रेम, राजस्थानी वेषभूषा में सजी-धजी महिलाएं व 'पधारो म्हारे बीकाणा' का आर्ट बना रही हैं व इसके बदले मैगुमी ऊंट मालिक को 500 रुपए रोज देती हैं।

मैगुमी करीब दस साल पहले भारत घूमने आई थीं। इस दौरान बीकानेर यात्रा में कैमल फेस्टिवल देखा था। पहली बार ऊंट फैस्टीवल देखकर वह हर कैमल फेस्टिवल देखने के लिए आने लगीं।

मैगुमी कहती है कि वह आर्ट की शौकीन हैं। उसने अपने दोस्त संजय इणखियां को फोन करके एक ऊंट की व्यवस्था करने के लिए बोला । ऊंट की व्यवस्था के बाद मैगुमी दिनभर ऊंट पर कतरन करके कई तरह की आर्ट बनाती हैं। मैगुमी ने अन्य कलाकारों को देखकर ही यह कला सीख ली है । अब वो इस कला में माहिर हो चुकी हैं।

मैगुमी ने ऊंट के एक तरफ राजस्थानी युवती को नृत्य करते हुए दिखाया है। दूसरी तरफ कृष्ण और राधा को दिखाया है। ऊंट की कूबड़ पर भी राजस्थानी लोक कला को उकेरा है। इतना ही नहीं एक पैर पर 'कैमल फेस्टिवल' लिखा है। दूसरी तरफ 'म्हारो प्यारो बीकाणो' भी लिखा है। मैगुमी पिछले एक महीने से नाल गांव में रहते हुए वह ग्रामीण भोजन ही कर रही हैं।

अवैध तरीके से लगे बैनर-होर्डिंग बने परेशानी का सबब

सायला, (निसं)। जालोर जिले में सायला ग्राम पंचायत मुख्यालय पर पिछले कई साल से अवैध तरीके से बैनर व होर्डिंग्स जोर-शोर से लगाए जा रहे है। हालात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर धड़ल्ले से पोस्टर, बैनर व होर्डिंग लगे हुए हैं। ऐसे में अवैध तरीके से लगे पोस्टर, बैनर व होर्डिंग वाहन चालकों के लिए भी परेशानी का सबब बन रहे हैं।

नगर के पुराना व नया बस स्टैण्ड, पंचायत समिति मोड़, पुलिस थाना मोड़, अम्बेडकर चौक, अम्बे माता मंदिर मोड़, कात्यायनी माता मंदिर, वीराना तिराहा, बागोड़ा रोड तिराहा, मुख्य बाजारों एवं चौराहे पर जगह-जगह बैनर-होर्डिंग लगे हुए हैं। यहां स्कूल, निजी हॉस्पिटल एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के अलावा राजनीति में दखल रखने वाले लोगों द्वारा बैनर-होर्डिंग लगाने की होड़ मची हुई है। प्रशासनिक कार्रवाई नहीं होने से बैनर व होर्डिंग्स लगाने वालों के हौसले भी बुलंद है। इन लोगों ने डिवाइडर पर लगे साईन बोर्ड पर भी छोटे-बडे होर्डिंग्स लगा रखे है। जिससे यू-टर्न एवं डिवाइडर कट जैसे छोटे साईन बोर्ड दिखाई नही देते है।

- **स्कूल, निजी हॉस्पिटल व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के अलावा राजनैतिक दलों में बैनर-होर्डिंग लगाने की होड़ मची हुई है**

केशरसिंह भायल, ग्राम विकास अधिकारी सायला का कहना है कि ग्राम पंचायत की ओर से किसी को भी बैनर होर्डिंग्स लगाने की अनुमति नही दी हुई हैं। सार्वजनिक स्थानों पर लगे बैनर-होर्डिंग्स के लिए सार्वजनिक नोटिस जारी कर हटाने की कार्रवाई करेंगे।

मनमोहन मीणा, विकास अधिकारी पं.स. सायला के अनुसार सार्वजनिक स्थानों पर लगे बैनर होर्डिंग्स हटाने के लिए ग्राम पंचायत को नियमानुसार कार्रवाई करने के लिए निर्देश जारी करता हूं।